

देश में कब-कब बनी गठबंधन की सरकार, कितनी रही सफल

कितनी कार्यकाल भी पूरा नहीं कर सकीं?

नई दिल्ली, 9 जून (एजेंसियां)। 9 जून को देश को नई सरकार मिलने जा रही है। वाराणसी से संसद चुने गए नरेंद्र मोदी लगातार बाईं बाई प्रधानमंत्री पद पर की शपथ ले रहे। नरेंद्र मोदी के पहले दो कार्यकाल में भाजपा को स्पष्ट बहुमत था, इस बार उन्हें गठबंधन की सरकार चलानी है। यह पहली बार है जब मोदी गठबंधन की सरकार चलाएँ। इससे पहले 2001 से 2019 तक, मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री रहे और 2014 से 2024 तक प्रधानमंत्री रहे तो भाजपा की बहुमत बाली सरकारे रहीं। देश के संसदीय वित्तास में 10 साल बाद फिर से गठबंधन सरकार का दौर लौट रहा है। जब तक एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं है। आइये जनते हैं कि देश में कब-कब इस तरह की सरकारें बनीं? गठजोड़ बाली सरकारें कितने समय तक चलीं? सबसे ज्यादा और सबसे कब गठबंधन की सरकारें चलीं?

1979 में बनी देश की पहली गठबंधन सरकार

1977 में करेंट दलों ने मिलकर एक दल के चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ा। स्पष्ट बहुमत की सरकार बनी। यह देश की पहली गैर-कांग्रेसी सरकार थी। जीत के बाद मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। मोरारजी के नेतृत्व में

गठबंधन दो साल तक चला, लेकिन वैचारिक मतभेदों के कारण जनता पार्टी टूट गई। सरकार के गृह मंत्री रहे चरण सिंह ने पार्टी से अलग होकर जनता पार्टी सेक्युरिट बाई। कांग्रेस पार्टी के बाहरी समर्थन से चरण सिंह प्रधानमंत्री बने। यह देश में गठबंधन का पहला प्रयोग था। यह प्रयोग केवल 23 दिनों तक चला। 28 जूलाई 1979 को चरण सिंह सरकार ने शपथ ली। 20 अगस्त 1979 को जब नई सरकार को बहुमत के लिए संसद का सत्र बुलाया गया तो कांग्रेस ने चरण सिंह सरकार के समर्थन वापसी का एलान कर दिया। इसके बाद चरण सिंह को इसी दिन पड़ा। हालांकि, नए सिरे से चुनाव होने तक चरण सिंह का वायवाहक प्रधानमंत्री के तौर पर पद पर बने रहे। इसके बाद 1980 में देश में पहली बार मध्यावधि चुनाव हुए जिसमें जीतकर इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस वापस सत्ता में आई।

1989 में वीपी सिंह ने गठबंधन

सरकार बनाई

1980 के लोकसभा चुनाव के कारीब नौ साल बाद देश में एक बार फिर गठबंधन सरकार बाली दौर लौटा। 1989 में देश में लोकसभा के चुनाव हुए जिसमें राजीव गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा। यह पहली बार था जब

किसी भी पार्टी या चुनाव-पूर्व गठबंधन को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। चुनाव के लिए पूर्व कांग्रेस नेता विश्व नाथ प्रताप सिंह ने राष्ट्रीय मोर्चा नाम से एक नया गठबंधन बनाया। वी.पी.सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल ने 143 सीटें हासिल की। वी.पी.सिंह को भाजपा और लेफ्ट ने बाहर से समर्थन दिया। वहीं, डीएमके, एजेंसी और टीडीडी पैट्रियोटिक एजेंसी का हिस्सा बने। इस तरह कुल 280 संसदीय के समर्थन से वीपी सिंह प्रधानमंत्री बने। वी.पी. 194 सीटें वाली कांग्रेस को भाजपा और लेफ्ट ने वीपी सिंह वापस कर दिया। इसी दौरान उन्हें विहार के समर्त्रीपुर में गिरफतार कर दिया गया था। इसके बाद भाजपा ने वीपी सिंह सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया। इस सियायी घटनाक्रम के बाद एक और गठबंधन सरकार बनाने की कावयद हुई। इसी कड़ी में राष्ट्रीय मोर्चे का हिस्सा रही जनता दल दो धड़ों में बंटे रहीं। वीपी सिंह की यह सरकार

एक साल भी नहीं चल सकी। 1990 वह बक्त था जब अयोध्या में राम मंदिर के लिए आदेशन चरम पर था। इसी अंदेशन के दैशन भाजपा के सबसे बड़े नेता लाल कुण्ड आडवाणी की अयोध्या में राम मंदिर बनाने के लिए चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

गई। जनता दल के वरिष्ठ नेता चंद्रेश्वर नवंवर 1990 में कांग्रेस पार्टी के बाहरी समर्थन से वीपी सिंह के बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

1998 में अटल ने 13 महीने की सरकार चलाई

1998 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 244 सीटें मिलीं और वह बहुमत के आंकड़े से दूर रह गई। नरसिंहा राव ने पांच साल तक अल्पमत की सरकार चलाई।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

1998 में अटल ने 13 महीने की सरकार चलाई

1998 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 244 सीटें मिलीं और वह बहुमत के आंकड़े से दूर रह गई। नरसिंहा राव ने पांच साल तक अल्पमत की सरकार चलाई।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

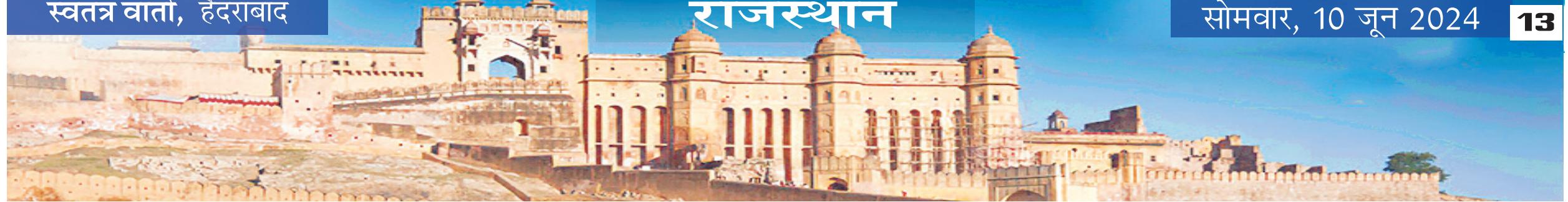
उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी। यह गठबंधन भी आपसी टीडीडी के बाहर। इसके बाद चंद्रेश्वर की बहुत दिनों तक नहीं चल पाया और देवगंगा की सरकार एक साल के भीतर ही गिर गई। इंद्र कुमार गुजराल ने उनकी जाह ली, लेकिन उनकी सरकार भी एक साल से ज्यादा नहीं चल सकी।

इंडिया गठबंधन में फूट, हरियाणा में अलग-अलग चुनाव लड़े गे आम आदमी पार्टी और कांग्रेस

उभरी है। हमे एक सीट पर जेजेपी, आईएनएलडी, बीएसपी से ज्यादा बोट मिले हैं। हरियाणा के विधान सभा चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्र



एकशन मोड में भजनलाल सरकार आम लोगों की परेशानी को लेकर लिया ये बड़ा फैसला

जयपुर, 9 जून (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव की आचार संहिता हाने के बाद भजनलाल सरकार एकशन मोड में है। राजस्थान में भीषण गर्मी के बीच सीधे भजनलाल शर्मा ने रखिवार को बड़ा फैसला लिया है। सीएम ने प्रदेश में रह रहे शुद्ध पानी पहुंचाने का लागत रखा है, इसके लिए अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। बैठक खत्म होने के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और जलदाय मंत्री कहै लाल चौधरी दिल्ली के लिए रवाना हो गए। जहां पर वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सथ प्रहण समारोह में शामिल होंगे।

सीधे भजनलाल शर्मा ने सुबह मुख्यमंत्री कार्यालय में जल जीवन मिशन के क्रियान्वयन व प्रगति को लेकर अधिकारियों की बैठक ली। इस बायन संवैधानिक अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मीटिंग में सीधे भजनलाल ने कहा कि प्रदेश में भीषण गर्मी के बीच लोगों को पीने के पानी की समस्या का समाना ना करना पड़े। पेयजल व्यवस्था के लिए अधिकारी हमेशा तप्पर रहे।



भजनलाल ने एकस पर लिखा कि शहर हो या गांव, 'हर घर शुद्ध जल' की उपलब्धता हमारी सरकार का लक्ष्य है। आज मुख्यमंत्री जलदाय मंत्री कन्हैया लाल चौधरी, सीएस सुधांशु पंत, एसीएस वित्त अधिकारी अरोड़ा सहित जलदाय विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

'हर घर शुद्ध जल' की हमारी सरकार का लक्ष्य बैठक के बाद सीधे

